भगत कबीर – सबद ८

नगन फिरत जौ पाईऐ जोग ॥

राग गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२४

नगन फिरत जौ पाईऐ जोग ॥
बन का मिरग मुकत सभ होग ॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
जब नही चीनस आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥
मूड मुंडाए जौ सिध पाई ॥
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥
बिंद राख जौ तरीऐ भाई ॥
खुसरै किउ न परम गत पाई ॥३॥
कह कबीर सुनहु नर भाई ॥
राम नाम बिन किन गत पाई ॥४॥४॥

सार: प्रकाश या मोक्ष का रास्ता केवल बाहरी रीति-रिवाजों का पालन करने से नहीं मिलता बल्कि हमारे दिल में जागरूकता और प्रेम को विकसित करने से मिलता है। यह कोई मंजिल नहीं है बल्कि एक निरंतर यात्रा है जो हमें रीति-रिवाजों से परे ले जाकर गहरे उद्देश्य से जोड़ती है और जीवन को अधिक सार्थक, अर्थपूर्ण बनाती है।

नगन फिरत जौ पाईऐ जोग ॥
अगर सच में आध्यात्मिक ज्ञान सिर्फ बिना कपड़े पहने, नंगा घूमने से प्राप्त किया जा सकता ।

बन का मिरग मुकत सभ होग ॥१॥
तब जंगल के सभी हिरण पहले ही मुक्त हो चुके होते। (१)

किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
इससे कोई फ़र्क़ क्यों पड़ता है कि कोई व्यक्ति नंगा है या जिस्म ढका है? इससे सामाजिक राय की खोखलेपन पर प्रकाश डालते हैं।

जब नही चीनस आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि लोग इस बात को नहीं समझते कि सर्वव्यापी ऊर्जा का असली सार तो आत्मा के भीतर है। (१)(विराम)

मूड मुंडाए जौ सिध पाई ॥
अगर सिर मुंडवाने से ही ज्ञान और मुक्ति मिलती।

मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥
तो भेड़ें क्यों नहीं मुक्त हो गईं? (२)

बिंदु राख जौ तरीऐ भाई ॥
अगर ब्रह्मचर्य से ही मोक्ष मिलता।

खुसरै किउ न परम गत पाई ॥३॥
तो खुसरै क्यों परम सम्मान के अधिकारी नहीं हुए? (३)

कह कबीर सुनहु नर भाई ॥
कबीर कहते हैं, सुनो मेरे भाई।

राम नाम बिन किन गत पाई ॥४॥४॥
गहन चिंतन और एकता के अभ्यास के बिना कौन मोक्ष पा सकता है? (४)(४)

तत्त्व: भगत कबीर के शब्द बिना सोचे-समझे विचारहीन कर्मकांडों के आचरण की विडम्बना को उजागर करते हैं। वह एक दिलचस्प सवाल पूछते हैं, अगर ज्ञान प्राप्त करना इतना आसान होता कि वस्त्र न धारण करने से मिल जाए तो हिरण जैसे जानवर भी ज्ञानी होते । यह तुलना दिखाती है कि सच्ची आध्यात्मिकता के लिए गहरी समझ और आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता होती है, न कि केवल सतही कार्यों, बाहरी आचरण या दिखावे की।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com